नासिरा शर्मा का कथा साहित्य
(सामाजिक चिंताओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण)

हिन्दी विभाग

(कला संकाय)

पी–एच.डी. उपाधि हेतु

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

को प्रस्तावित

शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निदेशक :

डॉ. मनीष रंजन
व्याख्याता (हिन्दी विभाग)
राजकीय महाविद्यालय, रायपुर (भीलवाड़ा)

शोधकर्त्री

सन्तरा मीणा उर्फ संतरा कुमारी मीणा

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

सत्र : 2017–18

महर्शि दयानन्द सरस्वती वि”वविद्यालय,अजमेर

OUTLINE OF PROPOSED RESEARCH WORK

प्रस्तावित शोध कार्य की रूपरेखा

(1) शोधार्थी का नाम (अंग्रेजी में) : SANTRA MEENA
URF SANTRA KUMARI MEENA

(हिंदी में) : सन्तरा मीणा उर्फ संतरा कुमारी मीणा

(2) शोध विषय का शीर्षक (अंग्रेजी में) : PSYCHOLOGICAL ANALYSIS OF SOCIAL CONCERNS IN NARRATIVE LITERATURE OF NASIRA SHARMA

(हिंदी में) : नासिरा शर्मा का कथा साहित्य (सामाजिक चिंताओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण)

3.	Location	:	भोध–कार्य स्थल
A.	Department where the work is to be done	:	**Department of Hindi Govrnment College, Raipur (Maharshi Dayanand Saraswati University, Ajmer)**

4. Introduction, Importance of Proposed Investigation, Objective :
परिचय, प्रस्तावित शोध का महत्त्व, उद्देश्य –

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रय संबंध है। वरिष्ठ आलोचकों ने इसे समाज का दर्पण भी माना है। इसी कारण आधुनिक काल तक अनेक साहित्यकारों ने सामाजिक परिदृश्य को संपूर्णता में प्रस्तुत किया है। महिला रचनाकारों के संदर्भ में कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, अलका सरावगी, नासिरा शर्मा आदि ने सामाजिक चिंताओं को ध्यान में रखकर अपनी पहचान बनाई है । इनमें नासिरा शर्मा ने समय के साथ–साथ बदलते परिवेश को महसूस कर अपने कथा साहित्य में व्यक्त किया है। उनके साहित्य में कुछ ऐसा कारण दिखाई पड़ता है जो उनके साहित्य और परिवेश बारे में सोचने को विवश करता है।

नासिरा जी का जन्म 1948 में हिन्दी साहित्यिक क्षेत्र इलाहाबाद (उ.प्र.) में हुआ। उनका परिवार पढ़े–लिखे शिया–मुस्लिम घराने से संबंध रखते हुए भी प्राचीन नगर की संस्कृति का सम्मान करता रहा। इसी कारण इनके साहित्य में हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति का समन्वय रहा और इसमें अलग–अलग संस्कृति की परम्पराओं की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। उन्होंने अपने आस–पास चल रही सामाजिक समस्याओं, भावबोध, सांस्कृतिक चिन्ताओं का विश्लेषण और संवेदना आदि को लेकर साहित्य सृजन किया है। वे सामाजिक मूल्यों को आदर्श मानते हुए लेखन और कथन में एकता प्रदर्शित करती हैं। फलस्वरूप उनके कथा साहित्य ने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाकर पाठकों को सामाजिक व सांस्कृतिक चिन्ताओं से रूबरू करवाने में सफलता प्राप्त की है।

उन्होंने हिन्दी के अलावा अंग्रेजी, उर्दू, फारसी और पश्तो भाषा पर अपने अधिकार के साथ भी काफी कुछ लिखा है, जो साहित्य जगत के लिए मूल्यवान है। वह भारत की ही नहीं, एशिया की सांस्कृतिक धरोहर है। ईरानी पृष्ठभूमि पर लिखी उनकी ज्यादातर कहानियों में हिन्दुस्तान के साथ–साथ दुनिया भर की कई संस्कृतियों की विविध अनुभूतियों की झलक घुली–मिली नजर आती है। इनमें *सात नदियाँ एक समंदर, शाल्मली, कुइयांजान, अक्षयवट, जीरो रोड* जैसे उपन्यासों और *इब्ने मरियम, शामी कागज, पत्थर गली, और खुदा की वापसी* जैसे कहानी संग्रह प्रमुख हैं। इस साहित्य में व्याप्त आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में विजातीयता एवं अकेलापन, आस्था और नैतिक मूल्य, अमानवीयता और मूल्य के टूटन, आर्थिक विवशता, तनाव और भटकन, विघटन और वैमनस्य आदि संश्लिष्ट रूप में उभर कर सामने आए हैं। उनका साहित्य बड़े सधे हुए अंदाज में देश, समाज, संस्कृति राजनीति, कला और आम जिन्दगी के बारीक रेशों को बुनने का काम करता है।

उनके उपन्यासों में वर्तमान सामाजिक बोध का स्वरूप एवं विश्लेषण में दाम्पत्य मूल्यों का ह्रास और नारी–पुरुष सम्बन्ध, विसंगतियाँ, महानगरी बोध, अस्तित्त्वबोध, अकेलापन और भटकाव, नैतिकता और क्षणभोग, सम्बन्धों की तलाश और छटपटाहट आदि का उल्लेख हुआ है। उन्होंने वर्तमान समय में मौजूद नये मुद्दों जैसे–शिक्षित समाज होने पर भी लड़कियों को महत्त्व न देना, तलाक की समस्या, पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ते हुए चलन का दुष्प्रभाव, दहेज की समस्या के साथ–साथ आतंकवाद की समस्या को भी अपने कथा साहित्य में उपस्थित करती हैं। कथा साहित्य के अतिरिक्त नासिरा शर्मा ने नाटक तथा फिल्में, बाल साहित्य, संस्मरण, रिपोर्टर आदि के क्षेत्र में भी अपना बहुमूल्य योगदान रहा है।

मनोविज्ञान मुख्यतः मानव के मानसिक क्रियाओं एवं व्यवहारों के अध्ययन से सम्बन्धित है, किन्तु इसे समाजों के ऊपर भी लागू किया जा सकता है। सामाजिक मनोविज्ञान में हम जीवन के सामाजिक पक्षों से सम्बन्धित अनेकानेक प्रश्नों के विश्लेषण व उत्तरों को खोजने में मदद का प्रयास करते हैं। नासिरा शर्मा का कथा साहित्य जीवन के अनछुए पहलुओं को समझने का एक माध्यम है। यह सामाजिक चिन्तन का विकास करने का तरीका है। अपने लेखन से समस्याओं को समाज तक पहुँचाना और उन पर निर्णय लेना, एक साहित्यकार की विशेषता भी होती है। उनका साहित्य समाज के बारे में सोचकर अच्छा परिवर्तन लाने की पहल का समर्थन करता है। इस तरह एक नवीन सोच जो समाज का नए ढंग से विश्लेषण कर शोध की मौलिकता, नवीनता व प्रासंगिकता की दृष्टि को ध्यान में रखकर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कर शोध कार्य को नई दिशा में मेरे द्वारा आगे बढ़ाने का एक प्रयास है। हिन्दी साहित्य में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा कथा साहित्य अपने सीमित दायरे से निकलकर विस्तृत क्षेत्र में प्रविष्ट करता है।

नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में सामाजिक व सांस्कृतिक समस्याओं की चिन्ताओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कर नया शोध प्रस्तुत कर समाज को नई पहल से अवगत कराने का प्रयास किया जाएगा। यह शोधकार्य नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में सामाजिक समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में एक महत्त्वपूर्ण शोधकार्य होगा जिसकी महत्ता को निम्नवत स्पष्ट किया जा सकता है –

1. प्रस्तुत शोध कार्य नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में सामाजिक समस्याओं के पक्ष को मौलिक एवं वस्तुपरक ढंग से मूल्यांकित करने का प्रयास है, जहाँ सामाजिक चिंताओं की गहन एवं मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। अतः इस दृष्टि से यह शोधकार्य महत्त्वपूर्ण कहा जाएगा।
2. उनका साहित्य आज भी वस्तुपरक तटस्थ एवं मौलिक मूल्यांकन की अपेक्षा रखता है। इस शोध–कार्य से नासिरा जी के कथा साहित्य में मानवीय संवेदनात्मक धरातल को अपनाकर नई अवधारणा प्रस्तुत होगी तथा उनके कथा साहित्य का निष्पक्ष आकलन व मूल्यांकन करने के कारण व्यापक रूप से इस शोध–कार्य की असंदिग्ध उपादेयता होगी।

4. इस शोध–कार्य के माध्यम से नासिरा जी के कथा साहित्य में सामाजिक चिन्ता से जुड़े विविध आयामों का विशिष्ट एवं व्यापक मूल्यांकन होगा, वही उनके साहित्यिक वैशिष्ट्य से जुड़े अन्य पक्षों पर भी पुनर्विचार एवं पुनरावलोकन होने से यह शोध–कार्य महत्त्वपूर्ण कहा जाएगा।

उपर्युक्त दृष्टियों से यह शोध–कार्य साहित्य जगत में अपनी तरह का नितांत मौलिक, विशिष्ट एवं असंदिग्ध महत्त्व का शोधकार्य होगा। इस अध्ययन से हिन्दी जगत् में कुछ ऐसे निष्कर्ष निकलकर आएँगे, जिनका सामाजिक चिंताओं का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय स्थान होगा। निश्चय ही यह विषय शोधकार्य की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण कहा जाएगा।

प्रस्तुत शोध–कार्य के उद्दे"य को निम्नलिखित बिंदुओं में समेटा जा सकता है –

1. नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में सामाजिक समस्याओं की चिन्ता का मनोविज्ञान द्वारा विश्लेषण कर समाधान खोजना।
2. वर्तमान समय में समाज में व्याप्त सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक तत्त्वों की पहचान कर उसकी मूल संवेदना पर प्रकाश डालना।
3. हिन्दी कथा साहित्य में हाल ही में आए पर्यावरण विमर्श, सत्ता–विमर्श, तथा सांस्कृतिक चिंताओं की पहचान कर, समाज और मनुष्य के अंतर्सम्बंधों की व्याख्या के साथ तथ्यपरक अनुशीलन ।
4. नासिरा शर्मा के यथार्थ बोध की प्रस्तुति से अवगत कराना।
5. नासिरा शर्मा के द्वारा सामाजिक चिंताओं के पुरातन एवं नये स्वरूप को प्रकट करना।

5. Review of Literature (Work already done on the Subject of proposed research study) :

प्रस्तावित शोध के विषय पर पूर्व में किए गए कार्यों की समीक्षा –

पूर्व के अनुभव के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन किया जाता है एवं उसके आधार पर शोध कार्य की दिशा निर्धारित की जाती है। शोध कार्य करने के उद्देश्य से स्वयं की अनुभूति की आवश्यकता होती है। अतः इस संदर्भ में शोध परियोजना की समीक्षा आवश्यक है।

पूर्व में हो चुके शोध–ग्रंथ –

जाहिदा जबीन (2001)	–	''नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में संवेदना एवं शिल्प''
पूजा (2011)	–	''नासिरा शर्मा के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन''
अशोक एम बांभणिया (2015)	–	''नासिरा शर्मा के कहानी साहित्य में समकालीन समस्याएँ : एक अध्ययन''
गौस्वामी स्वाति बहन प्रफुल भाई (2016)	–	''नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में मानवीय संवेदना''

आलेख –

अशोक तिवारी	–	''नासिरा शर्मा – इलाहाबाद से पश्चिम एशिया तक''
रोहिणी अग्रवाल	–	नासिरा शर्मा के उपन्यास 'शाल्मली' के बहाने स्त्री विमर्श पर चर्चा

इससे स्पष्ट है कि पूर्व में इस विषय को केन्द्र में रखते हुए शोध–ग्रंथ बहुत ही कम उपलब्ध हैं। चूंकि यह शोध विषय की नवीनता के चलते ऐसा हुआ है। उपर्युक्त प्रस्तुत शोध ग्रंथों में शोधकर्ताओं ने नासिरा जी के कथा साहित्य के माध्यम से कई राजनीतिक ,सामाजिक समस्याओं से रूबरू कराने का प्रयास किया है। कुछ ने कथाकार के शिल्प पक्ष पर बल दिया है। लेकिन वे उसे संपूर्णता में प्रस्तुत नहीं करते। कुछ ने कथा साहित्य में बताई गई समस्याओं का वर्णन करते हुए उनके समाधान का पक्ष रखा है। ये शोध–ग्रंथ नासिरा जी के कथा साहित्य का विश्लेषण करता हुआ सामाजिक चिंताओं को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने सतही प्रयास है। नासिरा जी के कथा साहित्य पर जो शोध हुए हैं वे या तो उनके समूचे व्यक्तित्व एवं कृतित्व को निरूपित करते हैं या फिर केवल नारी पात्रों को लेकर। समग्रतः उनके कथा साहित्य की सामाजिक चिंताओं के मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक अध्ययन जैसी व्यापकता को लेकर कोई शोध–कार्य नहीं हुआ है।

6. Research Gaps idendified in the proposed filed of investigation :

शोध रिक्तता (शोध के प्रस्तावित क्षेत्र में शोध रिक्तता की पहचान) –

प्रस्तावित विषय पर किसी भी शोधार्थी ने एक समग्र अध्ययन प्रस्तुत नहीं किया है। नासिरा शर्मा उन कथकारों में हैं जो कथाकार निरंतर सृजन–कर्म में लीन हैं। उनकी सामाजिक चिंताओं और उसके मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक स्वरूप पर दृष्टिपात अभी तक किसी भी शोध ग्रंथ में नहीं की गयी है। नासिरा शर्मा का लेखन बीसवीं शती के आठवें दशक से लेकर इक्कीसवीं सदी के दुसरे दशक तक फैला है। अतः इस शोध में बीसवीं सदी के अंतिम दशक से लेकर इक्कीसवीं सदी की बढ़ती हुई सामाजिक चुनौतियों की व्यापकता के आयामों को उद्‌घाटित किया जाएगा। कथाकार ने दिनोंदिन बढ़ती जा रही चुनौतियों की संश्लिष्टता को अपने साहित्य में उपस्थित किया है। इस तथ्य को अब तक प्रदर्शित नहीं किया गया है । इसके साथ ही साथ उनके मनोवैज्ञानिक पहलुओं को विश्लेषित कर अध्ययन को गहाराई प्रदान की जाएगी। इस शोध में कई ऐसे नए बिंदु उभरकर सामने आएँगे जो अब तक प्रकट नहीं हुए। इसलिए प्रस्तावित शोध, अंतराल को पाटने का कार्य करेगा।

7. Major Hypothesis (If any) : मुख्य परिकल्पना –

बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से लेकर आज का समय चुनौतियों से भरा पड़ा है। यह दौर वैश्वीकरण के दौर से लेकर स्वतंत्रता के अनेक आयामों को संदेह की दृष्टि से देखने का दौर है। वर्तमान समय में साहित्यिक दौर ऐसी स्थिति में है जिसमें अपने समय के सच को कथाकार निश्चित तौर पर सतर्क होकर देखते हुए अभिव्यक्त करने की जिममेदारी उठाता है। इस शोध में नासिरा शर्मा के द्वारा प्रस्तुत सामाजिक जीवन से जुड़े मुद्दों की सच्चाई की परख की जाएगी। उनके कथा साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ में मानवीयता की पक्षधरता की तलाश की जाएगी। प्रस्तुत शोध मानवीयता के इसी पैमाने से कथाकार के साहित्य में उपस्थित कालखंड की सामाजिक चिंताओं का मनोवैज्ञानिक ढंग से जाँच–पड़ताल के रूप अपनी उपस्थिति देगा।

8. Research Methodology : शोध पद्धति –

जोसफ गिबाल्डी के अनुरूप शोध की पद्धति में अधिक से अधिक संदर्भ ग्रंथों का संकलन किया जाता है और उन्हें एक साथ तर्कसम्मत क्रम में व्यवस्थित कर अध्ययन किया जाता है। इस आधार पर चिंतन का एक रूप विकसित होता है जो शोध को दिशा प्रदान करता है।

आंकड़ों का स्रोत –

(I) **प्राथमिक स्रोत –** प्राथमिक आंकड़ों का संग्रह, लेखिका से साक्षात्कार व प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया जाएगा। शोध–कार्य के दौरान नासिरा शर्मा की नवीनतम कृतियों को भी शामिल किया जाएगा।

(II) **द्वितीयक स्रोत –**

द्वितीयक आंकड़ों का संग्रह विषय से सम्बन्धित साहित्य आलेखों, शोध–पत्रों, पुस्तकों, हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं एवं प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व इंटरनेट पर प्रकाशित उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध प्रबंध की अध्याय योजना

(प्रस्तावित शोध कार्य की अस्थायी अध्ययन योजना शोध की प्रगति, तथ्यात्मक उपलब्धियों व कारणों से संभावित कुछ परिवर्तनों के अतिरिक्त प्रस्तावित शोध कार्य के शीर्षक और उपशीर्षकों सहित अस्थायी अध्याय योजना निम्नलिखित है)

नासिरा शर्मा का कथा साहित्य
(सामाजिक चिंताओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण)

प्रथम अध्याय– सामाजिक चिन्ता और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की अवधारणा : एक अध्ययन

1.1 समाज और उसके अवयव

1.2 समाजिक चिन्तन का आशय

1.3 कथा साहित्य और सामाजिक चिन्तन

1.4 मनोविज्ञान अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

1.1 कथा साहित्य और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

1.2 कथा साहित्य में सामाजिक चिन्तन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय– नासिरा शर्मा : व्यक्तित्व और कृतित्व

2.1 व्यक्तित्व

2.1.1 आरंभिक जीवन

2.1.2 शिक्षा एवं परिस्थितियाँ

2.2 कृतित्व

2.2.1 उपन्यास

2.2.2 कहानी

2.2.3 अन्य साहित्यिक विधाएँ

2.2.4 समकालीन परिवेश में रचना कौशल

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय– नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में सामाजिक चिन्ताओं का अध्ययन : मनोविश्लेषण के संदर्भ में

3.1 भारतीय व प्रवासी जीवन की सामाजिक अर्न्तजटिलताएँ

3.2 वर्गान्तरण व सामाजिक परम्पराओं का विश्लेषण

3.3 पारिवारिक ढाँचे में बदलाव और गिरते जीवन मूल्य

3.4 स्त्री पुरूष संबंध मानसिकता

3.5 विशिष्ट सामाजिक चिन्ताएँ

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय– नासिरा शर्मा के कथा साहित्य का मनोविश्लेषण अध्ययन : सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक व आर्थिक चिन्ताओं के संदर्भ में

4.1 सांस्कृतिक चिन्ताएँ

4.1.1 सांस्कृतिक मूल्यों की संरचना

4.1.2 विस्थापन

4.1.3 भारतीयता और पश्चिमीकरण

4.1.4 अन्य सांस्कृतिक चिन्ताएँ

4.2 धार्मिक चिन्ताएँ

4.2.1 धार्मिक कट्टरता

4.2.2 अंधविश्वास

4.2.3 साम्प्रदायिकता

4.3 राजनैतिक चिन्ताएँ

4.3.1 राजनीति के बदलते तेवर

4.3.2 राजनीतिक आदर्श और यथार्थ

4.4 आर्थिक चिन्ताएँ

4.4.1 आर्थिक असमानता

4.4.2 आवास और परिवेश

4.4.3 बेरोजगारी

4.4.5 शहरीकरण

निष्कर्ष

पंचम अध्याय– नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में मानव व समाज के अंतर्सम्बंधों का मनोविश्लेषण अध्ययन

5.1 मानवीय संवेदना

5.2 यथार्थ बोध

5.3 आदर्श के स्वर

5.4 वैज्ञानिकता और शिक्षा का प्रसार

5.6 स्वतंत्र चिन्तन की अभिव्यति

5.8 पारस्परिक संबंधों में जटिल अंतर्विरोध

5.11 प्रेम के अंतरंग स्वरूप

5.12 आधुनिकता के नवीन आयाम

निष्कर्ष

षष्ट अध्याय– नासिरा शर्मा के कथा साहित्य का शैलीगत परिप्रेक्ष्य

6.1 कथा साहित्य की भाषा और शैली

6.2 भाषा की संप्रेषणीयता

6.3 प्रतीक और चित्रात्मकता

6.4 लोक की अभिव्यक्ति

निष्कर्ष

उपसंहार

परिशिष्ट – **नासिरा शर्मा का साक्षात्कार**

9. List of References cited : संदर्भ ग्रंथ सूची –

आधार ग्रंथ (कहानी संग्रह) –

क्र.सं.	**ग्रंथ का नाम**	**प्रकाशक**	**प्रकाशन वर्ष**
1.	शामी कागज	साहित्यिक प्रकाशन, दिल्ली	1980
2.	पत्थर गली	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1986
3.	संगसार	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली	1993
4.	इब्ने मरियम	किताबघर प्रकाशन, दिल्ली	1994
5.	सबीना के चालीस चोर	किताबघर प्रकाशन, दिल्ली	1997
6.	खुदा की वापसी	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली	1998
7.	इन्सानी नस्ल	प्रतिभा प्रतिष्ठान, दिल्ली	2000
8.	दूसरा ताजमहल	इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली	2002
9.	बुतखाना	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद	2002

उपन्यास –

1.	सात नदियां एक समंदर	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली	1984
2.	शाल्मली	किताबघर प्रकाशन, दिल्ली	1987
3.	ठीकरे की मंगनी	किताबघर प्रकाशन, दिल्ली	1989
4.	जिंदा मुहावरे	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	1992
5.	अक्षयवट	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन दिल्ली	2003
6.	कुइयांजान	सामयिक प्रकाशन, दिल्ली	2005
7.	जीरो रोड	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन	2008
8.	पारिजात	किताबघर प्रकाशन	2011
9.	अजनबी जज़ीरा	किताबघर प्रकाशन	2012
10.	कागज की नाव	किताबघर प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली	2014
11.	दूसरी जन्नत	वाणी प्रकाशन	2017
12.	शब्द पखेरू	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2017

लेख संग्रह –

1.	किताब के बहाने	किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली	2001

2.	राष्ट्र और मुसलमान	किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली	2002
3.	औरत के लिए औरत	सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली	2003
1.	साक्षात्कार	औरत की आवाज	
2.	रिपोर्ताज	जहाँ फौव्वारे लघू रोते हैं	
3.	संस्मरण	यादों के गलियारे	
4.	अनुवाद	आलोचना और बाल साहित्य में भी महत्त्वपूर्ण पुस्तकें	
5.	सीरियल	माँ, तड़प, आया बसंत सखि	
6.	सिनेमा	काली मोहिनी, सेमल का दरख़्त तथा बावली	

सहायक ग्रन्थ –

1. आर.जी सिंह , *भारतीय समाज मध्यप्रदेश*, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल 1987
2. एस.पी. श्रीवास्तव : *भारतीय सामाजिक समस्याएँ*, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, 1978
3. गणपति चंद्र गुप्त : *हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास* ,लोक भारती, इलाहाबाद, 2002
4. गोपाल राय : *हिंदी उपन्यास का इतिहास* , राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
5. गोविंद चातक : *आधुनिक हिंदी शब्दकोश*, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1986
6. जाहिदा जबीन, *नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में संवेदना एवं शिल्प*, डॉ., निर्मल पब्लिकेशन, दिल्ली, 2007
7. दंगल झाल्टे, *नए उपन्यासों में नए प्रयोग*, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1986
8. धर्मेंद्र वर्मा : हिंदी शब्दकोश, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
9. नारायण भादू , *संस्कृति के प्रश्न*, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर–2005
10. नवलजी : *नालंदा विशाल शब्द सागर*, आदिश बुक डिपो, नई दिल्ली, 1988
11. बलराम, *समकालीन हिन्दी कहानी का सफर*, एज्युकेशनल सप्लायर्स एण्ड ट्रेडर्स, दिल्ली, 1998
12. महेंन्द्रकुमार जैन , *हिन्दी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण*, जैन ब्रदर्स, नई दिल्ली, 1974
13. महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव, *समकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति*, आदर्श बुक डिपो, बरेली, 1979
14. मोहन राकेश (संपा), *साहित्य और संस्कृति*, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली
15. राधाकृष्णन (अनु. विराज एम.ए.), *धर्म और समाज* , राजपाल प्रकाशन, दिल्ली, सातवाँ–1975
16. राम आहुजा, *भारतीय सामाजिक व्यवस्था*, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 1975
17. राधाकृष्णन, *धर्म और समाज*, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली, 1975
18. शशि जैकब ,*महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता*, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 1989

19. शशि तिवारी, *भारतीय धर्म और संस्कृति,* मैत्रेयी महाविद्यालय, नई दिल्ली–1986

20. श्यामचरण दुबे :*परम्परा, इतिहास बोध और संस्कृति,* राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

21. श्यामचरण दुबे :*समय और संस्कृति,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996

22. श्यामचरण दुबे :*मानव और संस्कृति,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998

23. श्यामसुंदर दास : *साहित्यलोचन,* इंडियन प्रेस, प्रयाग, दसवां संस्करण, सं. 2001

24. सत्यदेव त्रिपाठी : *हिन्दी उपन्यास–समकालीन विमर्श,* अमन प्रकाशन, कानपुर, 2000

25. सत्यदेव त्रिपाठी : *हिन्दी उपन्यास–समकालीन विमर्श,* अमन प्रकाशन, कानपुर, 2000

26. संज्ञा : *स्त्री सशक्तीकरण की राजनीति* , शब्दसंधान प्रकाशन, दिल्ली, 2012

27. संज्ञा : *आज का स्त्री आंदोलन* , शब्दसंधान प्रकाशन, दिल्ली, 2011

28. सुनीता सक्सेना :*महिला उपन्यासकारों की सामाजिक चेतना,* आशा पब्लिशिंग हाउस कम्पनी, दिल्ली, 2004

29. सुरेश सिन्हा : *उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ,* रामा प्रकाशन नसीराबाद, लखनऊ, 1965

30. सुरेंद्र उपाध्याय : *कहानी : प्रवृत्ति और विश्लेषण,* नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 1996

31. हरदेव बाहरी : *प्राचीन भारतीय संस्कृति कोश,* विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 1988

32. ज्ञानवती : *समकालीन हिंदी कहानी : यथार्थ के विविध आयाम,* हिंदी बुक सेंटर , नई दिल्ली, 1994

<u>पत्रिकाएँ</u>

1. हंस, राजेन्द्र यादव, 2005 (अगस्त)
2. वाड्.मय (डॉ. एम. फिरोज अहमद), त्रैमासिक पत्रिका, जून–2009
3. नवभारत, समाचार पत्र, दिल्ली, 28 सितम्बर 2010
4. हिन्दुस्तान, समाचार पत्र, 10 जन., 2008
5. आजकल, साहित्यिक पत्रिका, 2011
6. वाड्.मय, जून 2009 (नसिरा शर्मा विशेषांक)
7. अहा! जिन्दगी, फरवरी 2017
8. कादम्बिनी, दिसम्बर 2016
9. आउटलुक, अगस्त 2017
10. समकालीन साहित्य समाचार, पत्रिका, जनवरी 2017
11. हिन्दी चेतना, पत्रिका, जनवरी–मार्च, 2015

<u>इंटरनेट –</u>

1. गद्य कोश

2. हिन्दी मीडिया इन

3. हिन्दी समय डॉट कॉम

वेबसाईट्स – www.deshkal.com

Hindi Khoj.com

Sodh Ganga.com

हस्ताक्षर

दिनांक –............/......../2017

शोधकर्त्री – सन्तरा मीणा

हस्ताक्षर मय सील व दिनांक
शोध पर्यवेक्षक – डॉ. मनीष रंजन
व्याख्याता – हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय, रायपुर (भीलवाड़ा)